भाषा अध्ययन केंद्र, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, मध्य प्रदेश

कक्षा : एम.ए. हिंदी (द्वितीय सेमेस्टर)

विषय : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य और उसका इतिहास

प्रश्न पत्र : प्रथम

कक्षा व्याख्यान शीर्षक : भक्तिकाल की सामान्य प्रवृत्तियाँ एवं सगुण भक्ति काव्य धारा

शिक्षक : डॉ निशी (हिंदी विभाग)

भक्ति काल का संक्षिप्त परिचय

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने भक्ति काल का समय सं. 1375 से 1700 (1318 ई. से 1643 ई.) निर्धारित किया है।
- हिंदी साहित्य इतिहास का द्वितीय चरण **भक्तिकाल** कहलाता है।
- सामान्यतः भक्ति काल का समय 14वी शती से 7वीं शती के मध्य माना जाता है।
- मोनियर विलियम्स के अनुसार 'भजु' धातु 'क्तिन' प्रत्यय जोड़ने से **भक्ति** शब्द की उत्पत्ति हुई। इसका अर्थ है - अपने उपास्य (आराध्य)

भक्ति काल की सामान्य प्रवृत्तियाँ

- भक्ति के इस महान साहित्य में निर्गुण एवं सगुण भक्ति में समान भावनाएं दृष्टिगोचर होती हैं जो इस प्रकार हैं।
- **<u>नाम महात्म्य</u>** - सभी भक्त कवियों ने के नाम की महत्ता को स्वीकार किया है

"निर्गुण की सेवा करो, सगुण का करो ध्यान"

- **<u>गुरु की महत्ता</u>** - सभी भक्त कवियों ने गुरु का महत्व स्वीकार किया है "गुरु

- **<u>भक्ति भावना का प्राधान्य -</u>** समस्त भक्त कवि अपने आराध्य के प्रति अनन्य भक्ति एवं प्रेम भावना के साथ साधना करने वाले हैं

"ज्ञानहि भक्तिहिं नहिं कछु भेदा"

- **<u>अहंकार का परित्याग</u>** - अहंकार का परित्याग इन भक्तों की परम विशिष्टता

- शास्त्र ज्ञान की अपेक्षा लोक व्यवहार के ज्ञान का प्राधान्य
- **सत्संगति महात्म्य** निर्गुण एवं सगुण कवियों ने सत्संगति पर विशेष बल दिया है
- **साधना मार्ग** - भक्त कवियों की भक्ति साधना मार्गों का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है
- **भक्ति साहित्य में समन्वय की भावना**

- **<u>सगुण भक्ति काव्य धारा -</u>** साकार ईश्वर की उपासना करने वाले कवियों की भक्ति सगुण भक्ति है जिसके अंतर्गत राम भक्ति काव्य धारा एवं कृष्ण भक्ति काव्य धारा प्रमुख है
- सगुण भक्ति काव्य धारा के कवि अवतारवाद में विश्वास रखते हैं तथा ईश्वर की लीलाओं का गान करते हैं
- सगुण भक्ति काव्य धारा के प्रवर्तक

सगुण भक्ति काव्य धारा की विशेषताएं

- ईश्वर के सगुण रूप की उपासना ।
- सगुण भक्ति में अवतारवाद की प्रधानता है ।
- सगुण भक्ति में लीला रहस्य (लीला वर्णन) विशेष है ।
- सगुण भक्ति में सौंदर्य उपासना का

- सगुण भक्ति में अद्वैतवाद का विरोध है ।
- विविध स्रोत के रूप में रामायण और भागवत प्रमुख उपजीवी ग्रंथ हैं ।
- जाति भेद को सगुण भक्ति काव्य धारा में अमान्य ठहराया गया है ।
- गुरु की महत्ता को सर्वोपरि स्वीकार किया है।

- सगुण भक्ति काव्य धारा में भक्ति के विविध रूप मिलते हैं
- **<u>निष्कर्ष :</u>** उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि हिंदी का सगुण भक्ति काव्य राम भक्ति और कृष्ण भक्ति का सम्मिलित रूप है ।
- इस काव्य में विविधता है, भक्ति परकता है, साहित्यकता है, आधुनिक मनोविज्ञान की शक्ष्म बारीकियां है।

- निश्चय ही सगुण भक्ति काव्य हिंदी साहित्य का एक प्रकार का ऐसा काव्य है जो अपनी विभिन्न विषमताओं के कारण जिनमें भक्ति भावना सर्वोपरि है, विशेष महत्व रखता है ।
- इस प्रकार मध्यकालीन सगुण काव्य में हिंदी साहित्य ने उत्कर्ष के चरम बिंदु को छू लिया है ।

धन्यवा
द